एक दस साल की लड़की की कहानी

आठ सौ साल पहले...

सी एन सुब्रह्मण्यम

यह लगभग 800 साल पहले की बात है – ठीक-ठीक कहें तो 30 अप्रैल सन् 1230 की। उस वक्त सम्पुरी की उम्र दस-एक साल की रही होगी। तुम पूछोगे कि इतनी पुरानी बात आपको कैसे पता चली? वो ऐसे कि मैं एक बहुत पुरानी किताब पढ़ रहा था। किताब का नाम है *लेखपद्धति* यानी लिखने का तरीका। इसमें सन् 800 से 1400 के बीच के कई तरह के दस्तावेज़ों के प्रारूप दिए गए हैं – बिक्री पत्र, खरीदी पत्र, राजाओं के बीच की संधियाँ, उधारी पत्र और तरह-तरह की चिट्ठियाँ, गुरू का पत्र शिष्य के नाम, बेटे का पिता के नाम, पति का नाराज़ पत्नी के नाम, सास का दामाद के नाम आदि...। बड़े दिलचस्प पत्र पढ़ने को मिले। इन्हें इकट्ठा किसने किया यह तो पता नहीं। हम केवल अन्दाज़ लगा सकते हैं कि लगभग 1500 के आसपास वह गुजरात के पट्टन शहर में रहता होगा। यह संकलन ऐसे दस्तावेज़ तैयार करने वाले मुनीमों के लिए बहुत उपयोगी रहा होगा। इसीलिए इसकी कई प्रतियाँ बनाकर जगह-जगह पढ़ाया जाता रहा।

लेखपद्धति में संकलित अनेक दस्तावेज़ों में से एक है स्वयमागत दासी पत्र – "खुद से आई दासी का पत्र"। इसी में संपुरी की कहानी दर्ज है। इसे पढ़कर मुझे बेहद दुख हुआ – दुख सिर्फ सम्पुरी की कहानी के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि ऐसी बातें आज भी हो रही हैं। केवल पुरानी बातें कहकर इन्हें भूला नहीं जा सकता है।

लो तुम भी पढ़ो यह पत्र:

संवत 1288, वैशाख सुदी 15, सोमवार.... खुद से बिकी दासी का विक्रय पत्र इस तरह लिखा गया है। दस साल की एक लड़की। संपुरी नाम की। राजपूत जात की। जगड़ की बेटी। माही नदी के किनारे बसे गाँव सिर्नर से। अकाल और म्लेच्छों से परेशान होकर आई है। जब राष्ट्रकूटों ने पूरे इलाके में लूटपाट मचाई, तब इस लड़की को पूरे समाज व रिश्तेदारों ने त्याग दिया। यह समझते हुए कि उसके दोनों तरफ के रिश्तेदार अकाल के कारण खुद भीख माँगने पर मजबूर हैं, वह बहुत परेशान होकर अकेले ही निकल पड़ी

उसके माता-पिता, भाई-भतीजे, मामा, उसके पिता की तरफ के सभी रिश्तेदार, उसकी सास, ससुर, जेठ आदि पति की तरफ के रिश्तेदार किसी ने भी उसे रोका नहीं। वह हर गाँव, हर घर से एक ग्रास खाने की ही भीख माँग रही थी और वह भी उसे मिला नहीं। भूख के कारण वह एकदम दुबली हो गई और उसके कपड़े फटे व मैले हो गए। वह रात को मन्दिरों व मठों में रुकी जहाँ यात्रियों को पानी दिया जाता था। .. वह यही सोचती दर-दर भटक रही थी कि मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? मुझ अनाथ की रक्षा कौन करेग? मेरा मर जाना ही अच्छा है। वह घर-घर जाकर कहती, "स्वामी, मैं एक अनाथ हूँ। क्या आप मुझे अपनी दासी बनाकर रखेंगे? ऐसे करते-करते एक दिन वह चहड़ नामक व्यापारी जो अमुक नाम के गाँव में रहता था, के पाँव पड़कर कहने लगी: मैं स्वेच्छा से आई हूँ। कृपा करके मुझे अपनी दासी बनाकर रखें और इस भयानक अकाल से बचाएँ। मैं जब तक ज़िन्दा रहूँगी आपके कहे अनुसार काम करूँगी। मैं काटना, कूटना, झाड़ू लगाना, पानी भरना, फर्श की लिपाई, मल फेंकना, आदि घरेलू काम तथा खेती के कामों को बिना कुछ कहे दिन-रात तथा बारिश, गर्मी व सर्दी तीनों मौसमों में करती रहूँगी। आप मुझे केवल अपनी क्षमता अनुसार भोजन, कपड़ा व चप्पलें दें। मैं इससे अधिक क्या माँगूँगी? जब उसने इस बात को चौराहे में खड़े होकर कहा, तो चहड़ ने उसकी बात को माना और उसे चार वर्ण वाले सारे लोगों के सामने अपनी दासी बनाना स्वीकारा। उस महिला ने फिर अपने आप को चहड़ की दासी बनाते हुए पूरे शहरवासियों के सामने यह बयान दिया: जब तक मैं जीवित रहूँगी, अगर आपके या किसी और के घर दासी का काम करते हुए चोरी की या यह सोचकर कहीं और चली गई कि भीख माँगना ही बेहतर है या जवानी में किसी अन्य मर्द के साथ चली गई, या आपके दुश्मनों से मिल गई,... तो आप मेरे बाल खींचकर, मुझे बाँधकर, पिटाई करके मुझे दासी के काम पर लगाएँ।... अगर मैं दिया गया काम शरारतवश न करूँ तो आप मुझे लात मारकर, लाठी से मारकर और यातनाएँ देकर मार ही डालें। फिर भी मेरे मालिक आप निर्दोष रहेंगे जैसे कि आप वहाँ उपस्थित ही न थे।... अगर मैं किसी कुएँ या तालाब में गिरकर या ज़हर खाकर आत्महत्या कर लूँ तो आप शहरवाले जानें कि मेरे मालिक निर्दोष हैं और मैं अपने किए व भाग्य के कारण ही मरी। मेरे मालिक व उनके परिवारवाले गंगा में नहाए जैसे पवित्र रहेंगे।

इस प्रकार पूरे शहर व पंचों के सामने मैं इस दस्तावेज़ पर स्वस्तिक के रूप में अपने हस्ताक्षर कर रही हूँ।"

(इसके बाद पाँच गवाहों के हस्ताक्षर)

(लेखपद्धति को पुष्पा प्रसाद ने संस्कृत से अँग्रेज़ी में अनुवाद किया है। इसी से यह हिन्दी अनुवाद तैयार किया गया है। पढ़ने में आसानी हो, इसलिए कहीं-कहीं अनुवाद को संक्षिप्त कर दिया है।)

एक दस साल की लड़की। उसकी शादी हो चुकी थी और शायद उसका पति मर चुका था। अकाल के समय सभी ने उसका साथ छोड़ दिया। भूखी-प्यासी दर-दर भटकती वह अपने आप को भोजन व कपड़े दिए जाने की शर्त पर बेचने के लिए मजबूर हो गई। वह अपने मालिक को उसे मारने-पीटने और यहाँ तक कि मार डालने का भी अधिकार दे देती है। यही नहीं, वह सरे-आम यह भी कहती है कि अगर वह अपनी दशा से परेशान होकर आत्महत्या कर ले तो भी उसका पाप उसके मालिक व उनके परिवार पर नहीं लगेगा। क्या तुम उसकी स्थिति की कल्पना कर सकते हो?

अगर दस साल की सम्पुरी हमारे सामने आए और पूछे कि उसके साथ ऐसा क्यों हुआ – तो हम क्या जवाब दे सकते हैं? क्या यह अकाल के कारण हुआ? क्या यह कहना सही नहीं है कि व्यापारी ने अकाल में फँसी एक अनाथ बच्ची की बेबसी का नाजायज़ फायदा उठाया। अकाल पीड़ित लोगों को सहायता की जगह उनको गुलाम बनाकर आत्महत्या के लिए विवश करना – इस बात को उस समाज ने कैसे स्वीकारा?

इस दस्तावेज़ से उन दिनों की गुलामी प्रथा के बारे में बहुत कुछ पता चलता है – दासियों से क्या-क्या काम करवाते थे? उनसे कैसे व्यवहार की अपेक्षा थी? उनके अधिकार क्या थे? आदि। मालिक भी कुछ बातों में दासियों से डरते थे, जैसे वे कहीं भाग न जाएँ, कहीं अत्याचारों से परेशान होकर उनके दुश्मनों से न मिल जाएँ, कहीं उनकी मारपीट और यातनाओं के कारण आत्महत्या न कर लें। उन्हें दासी के मरने से उतनी परेशानी न थी जितनी इससे कि उन पर पाप लगेगा। इस दस्तावेज़ के माध्यम से वे उस पाप से भी छुटकारा चाहते थे।

दास प्रथा अँग्रेज़ों के काल में ही कानून बनाकर रोक दी गई। लेकिन हम आए दिन अखबारों में पढ़ते रहते हैं कि कैसे बच्चे-बच्चियाँ बकरियों की तरह बेचे जाते हैं। चूँकि यह सब गैर कानूनी है, इनके बारे में पता लगाना बहुत मुश्किल है। संपुरी शायद इन बच्चों में जीवित है। आज भी वह इन्तज़ार कर रही है कि समाज उसे सहारा दे, काम दे और सम्मान दे। यह कब होगा?

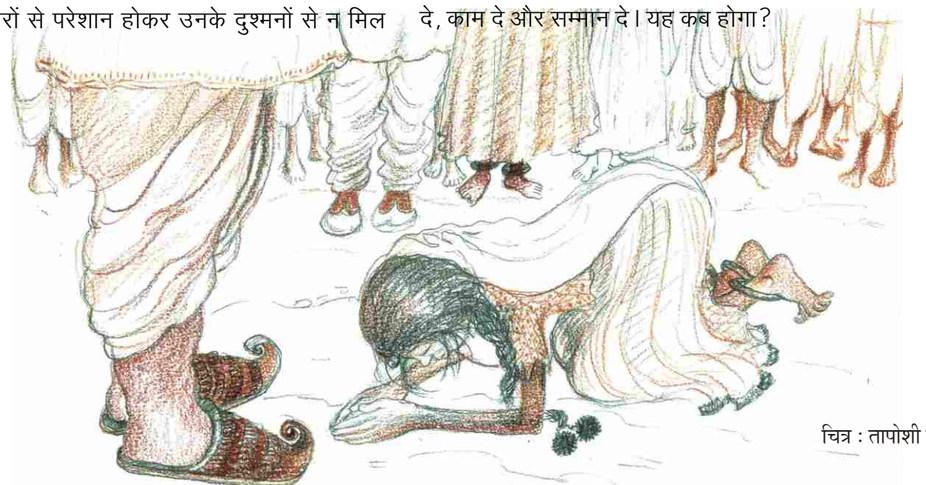

चित्र : तापोशी घोषाल